Second Year T.D.C. (Arts) Examination, 2001

RAJASTHANI SAHITYA
Paper-II
(Padya)
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)
पद्य

Time : 3 Hours
[Maximum Marks :100]

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) झिरमिर झिरमिर मे'वो बरसै, घटा घिरी घणघेर।
च्यारूं मेर खितिज पर जलहर-चूमै भू रा छोर।
अधरां अंधर धरीज्या।
ताल-तलाई सारा-पोलांपोल भरीज्या।।
बरखा-बनड़ी बणी बावली, करसी फैल अनेक।
फेरा पै'ली छोड़ सुरंगां , कर्‌या सांवला भेख।
चंवरी देख रिसाई।
बाद करै बादीली, मानै नही मनाई।। 10

अथवा

नवी नवेली धण अलबेली, पणघट की पणिहार।
गजगाभण बण मनड़ो मोवै, चालै हलवै भार।
पायल बाजै छिम-छिम।
सावण मास सुरंगो, बूंदा बरसै रिमझिम।।
नणदल रूपवती पर देखो, रीझे आखो गाँव।
चंदाबदनी गोर-निछोरी चनणा बाई नाँव।
रामू बणियो जण-जण।
लाजै अखन कंवारी जोबन निखरै छण-छण।।

(ख) धरम धरम सब एक है, पण बरताव अनेक।
ईश जाणणो धरम है, जीरो पंथ विवेक।।
पर घर पग नीं मेलणो, बना मान-मनवार।
अंजण आवै देख'नै सिंगल रो सतकार।।
कांटो कादो रेत जल, सघला पड़नै पांव।
रोकै सरतै चालतां, जश्यौ जणी रो दाव। 10

अथवा

रेंठ फरै चरक्यो फरै पण फरवा में फेर।
वो तो वाड हर्‌यौ करै, यो छूंता रो ढेर।।
कारट तो केतो फरै, हरकीनै हकनाक।
जीरी व्है वीनै कहै, हियै लिफाफो राख।।
फेर फेर में फेर है, जीनै जश्यौ जणाय।
नल ने तो जल मोकलो, फेर फेरवा मांय।।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

(ग) बिहूं लोचनै नीर-धारा बहंती,
कनैयौ कनैयौ जसूदा कहंती।
कलंदी तणै आई लोटंत कांई,
गयौ जांणि चिंतामणि रंक गांठै।। 10

अथवा

कटक्कां खगां बाहरो नाग काछै,
अमां नागणी-पत्य रौ जूझ आछै।
बुलाड़ौ जगाड़ौ जुवौ जुध्ध बाथै,
हारियां जीतियां करतार हाथै।।

2. 'मेघमाल' ऋतु-काव्य परम्परा की श्रेष्ठ रचना है। सोदाहरण समझाइए। 20

अथवा

'मेघवाल' काव्यकृति की, कला पक्ष और भाव पक्ष के आधार पर समीक्षा कीजिए।

3. 'चतुर चिन्तामणि' के पठित नीति प्रधान दोहों के आधार पर सोदाहरण बतलाइए कि इनमें 'गागर में सागर समाहित है। 20

अथवा

'चतुर चिन्तामणि' के पठित दोहों के आधार पर भावपक्ष की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

40 'नागदमण' काव्यकृति में सांया झूला के भक्ति भावों का सुन्दर प्रकाशन हुआ है। सोदाहरण समझाइये। 20

अथवा

सांया झुला रचित 'नाग दमण' की काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये।

5. (क) निम्नलिखित तत्सम शब्दों में से किनहीं पांच के तद्भव रूप लिखिए:

(i) यश
(ii) अप्सरा
(iii) दुर्ग
(iv) तुलसी
(v) द्विवर
(vi) योगमाया
(vii) श्रृंगार
(viii) मातृभूमि
(ix) काष्ठ
(x) अंगरक्षिका 5

(ख) 'वयण सगाई' अलंकार के भेदाभेदो को सोदाहरण समणइये। 5

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com